



TREATMENT COMPLIANCE

Compliance with treatment, or treatment adherence, is a very important clinical issue. In prescribing medication, compliance usually means "the extent to which the patient takes the medication as prescribed".

Many mental disorders require more than just a brief medication intervention. For some patients, several months or years of medication or even lifelong medication are necessary. For instance, the recommended treatment time for the first episode of depression is six to 12 months, but almost half of patients stop taking their antidepressant within three months for various reasons.

Noncompliance can have serious consequences, such as relapse or recurrence of the illness. Therefore, enhancing medication compliance (or preventing noncompliance) is an important treatment goal for patients and clinicians. The first step in this process is the recognition and prevention of factors that could lead to noncompliance.

Factors Affecting Compliance

Factors that may affect patients' compliance with medication can be summarized along five dimensions:

- ◇ Patient characteristics (e.g., attitudes toward illness and medication, socioeconomic considerations, social supervision);
- ◇ The treatment setting (e.g., primary care versus specialty office and inpatient versus outpatient);
- ◇ Medication characteristics (e.g., side effects, individual sensitivity to side effects, simple versus complicated medication regime);
- ◇ Clinical features of the disorder (e.g., chronicity, exaggerated feelings of guilt in depression, suspiciousness in schizophrenia, substance abuse and comorbid anxiety); and
- ◇ Clinician expertise (e.g., knowledge of pharmacology, empathy, instilling hope, successful integration of pharmacology and psychotherapy).

Studies have emphasized that noncompliance may be an especially serious issue in the elderly, where its prevalence may be as high as 75%.

Treatment Adherence

Strategies to improve treatment adherence include:

- 1) Recognition of factors leading to noncompliance;
- 2) Establishment of a strong alliance with the patient
- 3) patient education about the illness and the importance of maintenance treatment;
- 4) Patient education about the medication, drug interactions, pharmacokinetics and side effects;
- 5) Simplification of medication regime(s);



उपचार अनुपालन:—

चिकित्सा का अनुपालन या उपचार अनुपालन एक अहम मुद्दा है। जब दवाई बनाई जाती है तब अनुपालन यानी किस हद तक रोगी को बताई हुई दवाई लेनी है, यह बहुत जरूरी है।

कई मानसिक रोगों में लम्बी दवाइयां चलती हैं, परंतु कुछ रोगियों के लिए कई महीने या कुछ साल से लेकर उम्र भर दवाइयां लेनी पड़ सकती हैं। किसी भी अवसाद के लिए छह से बारह महीने की अवधि काफी है।

परंतु रोगी बीच में ही दवाई लेना छोड़ देते हैं।

गैर अनुपालन के बुरे असर हो सकते हैं जैसे की बीमारी का लौट कर वापस आना। दवाई का अनुपालन बढ़ाना चिकित्सक व रोगी के लिए अहम मुद्दा है।

इसमें पहला और अहम मुद्दा है यह जांचना कि किन कारणों से अनुपालन नहीं हो रहा है।

कारण जिनसे अनुपालन में कमी आती है वह इस प्रकार है:—

(क) रोगी का चरित्र (दवाइयों के प्रति रवैया)

(ख) उपचार सेटिंग (अफसर व इनपेशेंट बनाम आउटपेशेंट, सेटिंग)

(ग) दवाइयां (पार्श्व असर, व्यक्तिगत असर, सामान्य व उलझी दवाइयों के शासन)

(घ) बीमारी के लक्षण (तीव्रता, अवसाद में अधिक हीनता का भाव, पागलपन में शक करना, नशे की लत, साथ होती घबराहट)

(ङ) नैदानिक विशेषज्ञता (दवाइयों की पहचान, सहानुभूति, आशा जाग्रत करना, दवाइयों व मनोचिकित्सा का सफल एकीकरण)

अंकड़ों के हिसाब से चिकित्सा अनुपालन (75 प्रतिशत) एक गंभीर विषय है।

चिकित्सा से जड़ाव:—

चिकित्सा से जुड़ाव बढ़ाने के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान आवश्यक है:—

(1) उन कारणों की जांच जिनसे अनुपालन हो रहा है।

(2) रोगी से मजबूत गठबंधन का होना।

(3) रोगी के बारे में रोगी को ज्ञात कराना और चिकित्सा का महत्व समझाना।

(4) रोगी को दवाइयां, दवा के लिए बातचीत, फार्माकोकाइनैटिक्स व उससे जुड़े असर बताना।

(5) दवाइयों की विधि बताना और उसे कैसे लेना है।



ANXIETY MEDICATIONS

Understanding anxiety medication

Many different types of medications are used in the treatment of anxiety disorders, including traditional anti-anxiety drugs such as benzodiazepines, and newer options like antidepressants and beta-blockers.

Anti-anxiety drugs (tranquilizers / benzodiazepines)

Anti-anxiety drugs, also known as tranquilizers, are medications that relieve anxiety by slowing down the central nervous system. Their relaxing and calming effects have made them very popular: anti-anxiety drugs are the most widely prescribed type of medication for anxiety. They are also prescribed as sleeping pills and muscle relaxants.

Benzodiazepines are fast acting—typically bringing relief within thirty minutes to an hour. Because they work quickly, benzodiazepines are very effective when taken during a panic attack or another overwhelming anxiety episode. But despite their potent anti-anxiety effects, they have their drawbacks.

Common side-effects of benzodiazepines

- Drowsiness, lack of energy
- Clumsiness, slow reflexes
- Slurred speech
- Confusion and disorientation
- Depression
- Dizziness, lightheadedness
- Impaired thinking and judgment
- Memory loss, forgetfulness
- Nausea, stomach upset
- Blurred or double vision



चिंता विरोधी दवाइयां:-

कई प्रकार की चिंता विरोधी दवाइयां प्रयोग की जाती हैं जैसे कि बेनजोडाइजपीन। नए प्रकार की दवाइयों में अवसाद विरोधी व बीटा ब्लॉकर्स हैं:-

चिंता विरोधी जैसे ट्रैक्विलाइजर जैसी दवाइयां सेंट्रल नर्वस सिस्टम को धीमा करके चिंता को कम करती हैं। इसके शांत व आरामदायक असर ने इसे प्रसिद्ध बनाया है। यह ज्यादातर प्रयोग में आने वाली दवाई है। यह नींद की गोलियों के रूप में व मांसपेशियों को आराम देने वाली दवाई के रूप में उपलब्ध है।

बेनजोडाइजपीन तेजी से असर करती है- तीस मिनट से लेकर एक घंटे के अंदर आराम पहुंचाती है। यह तुरंत असर दिखाती है और बहुत प्रभावशाली है। इनके शक्तिशाली प्रभावों के साथ इनमें कमियां भी हैं:- इसे घबराहट के वक्त दिया जाता है।

इसके पार्श्व असर इस प्रकार हैं:-

(1) स्फूर्ति में कमी (2) सजगता में कमी (3) बोलचाल में फर्क (4) अवसाद (5) सिर चकराना (6) धुंधली दृष्टि (7) याददाश्त में कमी, भूल जाना (8) जी मिचलाना व पेट की गड़बड़ी (9) सोच व निर्णय में गड़बड़ी (10) स्थिति भ्रान्ति और भ्रम।